FAIZANE IMAME AA'ZAM
(HINDI BAYAAN)

عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم

फ़ैज़ाने इमामे आ'ज़म

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाखि़ल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है **:** जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

(جمع الجوامع للسیوطی ج ۷ ص ۱۹۹ حدیث ۲۲۳۵۲) (ज़ियाए दुरूदो सलाम, स. 11)

रुसुल मलक पे दुरूद हो वोही जाने इन के शुमार को
मगर एक ऐसा दिखा तो दो जो शफ़ीए रोज़े शुमार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمُعْجَمُ الکبیر لِلطَّبرانی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नह़्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 4361) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ اٰيَةً : "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बारगाहे रिसालत में मक़ामे इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم

हज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी ह़नफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد से ख़ास अ़क़ीदत रखते थे । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं एक रोज़ सफ़र करता हुवा, मुल्के शाम में मुअज़्ज़िने रसूल हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रौज़ए मुबारक पर ह़ाज़िर हुवा, वहां मेरी आंख लग गई और मैं ने अपने आप को मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में पाया । क्या देखता हूं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़बीलए बनी शैबा के दरवाज़े पर मौजूद हैं और एक उ़म्र रसीदा शख़्स को किसी छोटे बच्चे की त़रह़ उठाए हुवे हैं, मैं फ़र्ते़ मह़ब्बत से बे क़रार हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ बढ़ा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक क़दमों को बोसा दिया, दिल ही दिल में इस बात पर बड़ा ह़ैरान भी था कि येह ज़ईफ़ शख़्स कौन है ? इतने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुव्वते बाति़नी और इ़ल्मे ग़ैब के ज़रीए़ मेरी ह़ैरत व इस्ति'जाब (तअ़ज्जुब) की कैफ़िय्यत जान गए और मुझे मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : "येह अबू ह़नीफ़ा हैं और तुम्हारे इमाम हैं ।"

हज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपना येह ख़्वाब बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं कि इस से मुझे मा'लूम हो गया कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन लोगों में से है जिन के अवसाफ़ शरीअ़त के क़ाइम रहने वाले अह़काम की त़रह़ क़ाइमो दाइम हैं, येही वजह है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन से इस क़दर मह़ब्बत फ़रमाते हैं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इमामे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से जो मह़ब्बत है, इस से येह नतीजा भी निकलता है कि जिस त़रह़ आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ख़त़ा मुमकिन नहीं, इसी त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के करम से हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी ख़त़ा से मह़फ़ूज़ हैं ।

(کشف المحجوب، ص:۱۰۱ ابتغیر قلیل)

हमारे आक़ा हमारे मौला, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा
हमारे मल्जा हमारे मावा इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा
ज़माना भर ने ज़माना भर में बहुत तजस्सुस किया व लेकिन
मिला न कोई इमाम तुम सा इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(दीवाने सालिक, रसाइले नईमिय्या, स. 35)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से जहां हमें इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की अ़ज़मतो शान मा'लूम हुई, वहीं येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से दिलों के ह़ालात से भी बा ख़बर हैं, जभी तो ख़्वाब में सय्यिदुना दाता गंज बख़्श رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दिल में पैदा होने वाले सुवाल का जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "येह अबू ह़नीफ़ा हैं और येह तुम्हारे इमाम हैं ।" येह तो ख़्वाब था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो अ़त़ाए ख़ुदावन्दी से अपनी ह़याते ज़ाहिरी में भी कई ग़ैब की ख़बरें इरशाद फ़रमाईं । चुनान्चे,

बीनाई लौट आई !

ह़ज़रते सय्यिदतुना उनैसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : मुझे मेरे वालिदे मोह़तरम ने बताया : मैं बीमार हुवा तो सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए और देख कर फ़रमाया ! तुम्हें इस बीमारी से कोई ह़रज नहीं होगा, लेकिन तुम्हारी उस वक़्त क्या ह़ालत होगी जब तुम मेरे विसाल के बा'द त़वील उ़म्र गुज़ार कर नाबीना हो जाओगे ? येह सुन कर मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं उस वक़्त ह़ुसूले सवाब की ख़ात़िर सब्र करूंगा । फ़रमाया : अगर तुम ऐसा करोगे तो बिग़ैर ह़िसाब के जन्नत में दाख़िल हो जाओगे । चुनान्चे, साह़िबे शीरीं मक़ाल, शहनशाहे ख़ुश

ख़िसाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी विसाल के बा'द इन की बीनाई जाती रही, फिर एक अ़र्से के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन की बीनाई लौटा दी और इन का इन्तिक़ाल हो गया। (دَلَائِلُ النُّبُوَّۃ لِلْبَیْہَقِیّ ج۶ص۴۷۹، دارالکتب العلمیۃ بیروت)

इल्मे ग़ैबे ज़ाती और अ़ताई में फ़र्क़ !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत को सुन कर हो सकता है कि शैत़ान किसी के दिल में येह वस्वसा डाले कि ग़ैब का इ़ल्म तो सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही को है, तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कैसे ग़ैब की ख़बर दे दी ? तो अ़र्ज़ येह है कि इस में कोई शक नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **आ़लिमुल ग़ैबि वश्शहादह** है, उस का इ़ल्मे ग़ैब ज़ाती है और हमेशा हमेशा से है, जब कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام का इ़ल्मे ग़ैब अ़ताई भी है और हमेशा हमेशा से भी नहीं। उन्हें जब से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बताया तब से है और जितना बताया उतना ही है, उस के बताए बिग़ैर एक ज़र्रे का भी इ़ल्म नहीं। अब रहा येह कि किस को कितना इ़ल्मे ग़ैब मिला, येह देने वाला जाने और लेने वाला जाने। इ़ल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में पारह 30 सूरए तक्वीर आयत नम्बर 24 में इरशाद होता है :

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿۲۴﴾ (پ۳۰، التکویر: ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं।

इस आयते करीमा के तह़्त तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है : मुराद येह है कि मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास इ़ल्मे ग़ैब आता है तो तुम पर इस में बुख़्ल नहीं फ़रमाते, बल्कि तुम्हें बताते हैं।'' (تفسیر خازن ج۴، ص۳۵۷) इस आयत व तफ़्सीर से मा'लूम हुवा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों को इ़ल्मे ग़ैब बताते हैं और ज़ाहिर है बताएगा वोही जो ख़ुद भी जानता हो।

सरकार की नज़र में इमामे आ'ज़म का इल्मी मक़ाम !

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ग़ैब की ख़बर देते हुवे येह इरशाद फ़रमाया : لَوْ کَانَ الْعِلْمُ بِالثُّرَیَّا لَتَنَاوَلَہٗ اُنَاسٌ مِّنْ اَبْنَاءِ فَارِس या'नी इल्म अगर सुरय्या पर मुअ़ल्लक़ होता तो अवलादे फ़ारस से कुछ लोग इसे वहां से भी ले आते ।

(مسند احمد، ج۳ص: ۱۵۴، حدیث: ۷۹۵۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक से इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (की ज़ाते बा बरकत) मुराद है । इस में अस्लन शक नहीं है, क्यूंकि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ज़माने में अहले फ़ारस में से कोई शख़्स इल्म में इन के रुत्बे को न पहुंचा, बल्कि इन के शागिर्दों के (इल्मी) मर्तबे तक भी रसाई न हुई और इस में सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का खुला मो'जिज़ा (भी) है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर दी, जो होने वाला है बता दिया ।

(الخیرات الحسان، ص۲۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बात اَظْھَرُ مِنَ الشَّمْسِ وَ اَبْیَنُ مِنَ الْاَمْس (या'नी सूरज से ज़ियादा रोशन और रोज़े गुज़श्ता से ज़ियादा क़ाबिले यक़ीन) हो गई कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़त़ाए इलाही से इल्मे ग़ैब है, जभी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की आमद से पहले ही आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़बरदस्त इल्मी क़ाबिलिय्यत व सलाह़िय्यत की ख़बर दी । अब जैसा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया वैसा ही ज़ुहूर भी हुवा । इमामे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस दुन्या में तशरीफ़ लाए और चहार सू आप की इल्मी शोहरत के डंके बजने लगे, हर त़रफ़ इल्म की रोशनी फैल गई । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नामे नामी, इस्मे गिरामी 'नो'मान' के लुग़वी मा'ना को देखें तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वाक़ेई इस्मे बा मुसम्मा नज़र आते हैं । चुनान्चे, शैख़ुल इस्लाम शहाबुद्दीन इमाम अह़मद इब्ने ह़जर हैतमी मक्की शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

www.dawateislami.net

फ़रमाते है : उ़लमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का नाम 'नो'मान' ही है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के नाम में भी एक लत़ीफ़ बात मौजूद है। वोह येह कि नो'मान की अस्ल ऐसा ख़ून है जिस से इन्सानी जिस्म (का ढांचा) क़ाइम होता है। तो (इस त़रह़) सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم को नो'मान कहने की वजह येह है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ही फ़िक़्हे इस्लामी की बुन्याद हैं। (الخیرات الحسان، ص۳۱)

तुम्हारे आगे तमाम आ़लम, न क्यूं करे ज़ानूए अदब ख़म
कि पेश्वायाने दीन ने माना, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा
सिराज तू है बिग़ैर तेरे जो कोई समझे ह़दीसो क़ुरआं
फिरे भटकता न पाए रस्ता, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(दीवाने सालिक, रसाइले नईमिय्या, स. 35-36)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाम व नसब कुन्यत व लक़ब

आइये ! अब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मुख़्तसर तआ़रुफ़ और ह़याते मुबारका के चन्द गोशों के मुतअ़ल्लिक़ सुनते हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का नामे नामी नो'मान, वालिदे गिरामी का नाम साबित और कुन्यत अबू ह़नीफ़ा (और लक़ब इमामे आ'ज़म है)। आप सिने 80 हिजरी में (कूफ़ा) में पैदा हुवे और 70 साल की उ़म्र पा कर (2 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म) सिने 150 हिजरी में वफ़ात पाई। (تاریخ بغداد، ج ۱۳، ص: ۳۳۱، نُزهَةُ القَارِی ج ۱، ص: ۲۱۹) और आज भी बग़दाद शरीफ़ के क़ब्रिस्तान ख़ीज़रान में आप का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार मरजए ख़लाइक़ है। (تاریخ بغداد، ۱۳، ص: ۳۲۵) अइम्मए अरबआ़ या'नी चारों इमाम (इमाम अबू ह़नीफ़ा, इमाम शाफ़ेई, इमाम मालिक और इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) बरह़क़ हैं और इन चारों के ख़ुश अ़क़ीदा मुक़ल्लिदीन आपस में भाई भाई हैं। सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه चारों इमामों में बुलन्द

www.dawateislami.net

मर्तबा हैं, इस की एक वजह येह भी है कि इन चारों में सिर्फ़ आप ताबेई हैं। और 'ताबेई' उस को कहते हैं जिस ने ईमान की ह़ालत में किसी सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात की हो और ईमान पर उस का ख़ातिमा हुवा हो।

(نزھۃ النظر فی توضیح نخبۃ الفکر، ص۱۱۳، ملخصاً)

सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الاَکرَم ने मुख़्तलिफ़ रिवायात के तह़त चन्द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया है और बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से बराहे रास्त, सरवरे काइनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशादात भी सुने हैं। (الخیرات الحسان، ص:۳۳)

है नाम नो'मान इब्ने साबित, अबू ह़नीफ़ा है इन की कुन्यत
पुकारता है येह कह के आ़लम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 573)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अवसाफ़े इमामे आ'ज़म !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नुऐ़म رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की हैअत व ह़ालत, चेहरा, लिबास और जूते अच्छे होते थे और अपने पास आने वाले हर शख़्स की मदद फ़रमाते।

(اخبار ابی حنیفہ واصحابہ، ص:۱۶)

आप رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़द दरमियाना था, तमाम लोगों से ज़ियादा अह़सन अन्दाज़ में कलाम फ़रमाते और कसरत से ख़ुश्बू इस्ति'माल फ़रमाते, जब बाहर तशरीफ़ लाते तो अच्छी ख़ुश्बू से पहचाने जाते।

(اخبار ابی حنیفہ واصحابہ، ص:۱۷، ملتقطاً)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الاَکرَم दिन भर इ़ल्मे दीन की इशाअ़त के साथ साथ, क़ुरआने पाक की तिलावत और सारी रात इ़बादत व रियाज़त में बसर करते थे। ह़ज़रते मिस्अ़र बिन किदाम عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ السَّلَام फ़रमाते हैं : "मैं इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मस्जिद में ह़ाज़िर हुवा,

www.dawateislami.net

देखा कि नमाज़े फ़ज्र अदा करने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه लोगों को सारा दिन इल्मे दीन पढ़ाते रहते, इस दौरान सिर्फ़ नमाज़ों के वक़्फ़े हुवे। बा'द नमाज़े इशा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने दौलत सरा (या'नी मकाने आलीशान) पर तशरीफ़ ले गए। थोड़ी ही देर के बा'द सादा लिबास में मल्बूस ख़ूब इत्र लगा कर फ़ज़ाएं महकाते, अपना नूरानी चेहरा चमकाते हुवे फिर आ कर मस्जिद के कोने में नवाफ़िल में मश्ग़ूल हो गए, यहां तक कि सुब्हे सादिक़ हो गई, अब दरे दौलत (या'नी मकाने आलीशान) पर तशरीफ़ ले गए और लिबास तब्दील कर के वापस आए और नमाज़े फ़ज्र बा जमाअत अदा करने के बा'द गुज़श्ता कल की त़रह़ इशा तक सिलसिलए दर्स व तदरीस जारी रहा। मैं ने सोचा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत थक गए होंगे, आज रात तो ज़रूर आराम फ़रमाएंगे, मगर दूसरी रात भी वोही मा'मूल रहा। फिर तीसरा दिन और रात भी इसी त़रह़ गुज़रा। मैं बे ह़द मुतअस्सिर हुवा और मैं ने फ़ैसला कर लिया कि उ़म्र भर इन की ख़िदमत में रहूंगा। चुनान्चे, मैं ने इन की मस्जिद ही में मुस्तक़िल क़ियाम इख़्तियार कर लिया। मैं ने अपनी मुद्दते क़ियाम में, इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم को दिन में कभी बे रोज़ा और रात को कभी इबादत व नवाफ़िल से ग़ाफ़िल नहीं देखा। अलबत्ता ज़ोहर से क़ब्ल आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه थोड़ा सा आराम फ़रमा लिया करते थे।

(اَلْمَناقِب لِلْمُوَفَّق ج ۱ ص ۲۳۰ تا ۲۳۱ کوئٹہ) (अश्कों की बरसात, स. 6)

जो बे मिसाल आप का है तक़्वा, तो बे मिसाल आप का है फ़त्वा
हैं इल्मो तक़्वा के आप संगम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 573)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इमामे आ'ज़म का अन्दाज़े तिजारत !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दर्स व तदरीस और इबादते रब्बे ज़ुल जलाल के साथ साथ ह़ुसूले रिज़्क़े ह़लाल के लिये तिजारत का पेशा भी इख़्तियार फ़रमाया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

www.dawateislami.net

तिजारत में भी लोगों से भलाई, ख़ैर ख़्वाही और शरई उसूलों की न सिर्फ़ खुद पासदारी फ़रमाते, बल्कि अपने साथ काम करने वालों को भी इस की ताकीद फ़रमाते । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना हफ़्स बिन अब्दुर्रहमान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحمَۃُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہ के साथ तिजारत करते थे और उन्हें माले तिजारत भेजा करते । एक बार उन के पास कुछ सामान भेजते हुवे फ़रमाया : ऐ हफ़्स ! फ़ुलां कपड़े में कुछ ऐब है । जब तुम उसे फ़रोख़्त करो तो ऐब बयान कर देना । हज़रते सय्यिदुना हफ़्स رَحمَۃُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने माले तिजारत फ़रोख़्त कर दिया और बेचते हुवे ऐब बताना भूल गए और येह भी याद न रहा कि किस को बेचा है । जब इमामे आ'ज़म رَحمَۃُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہ को इल्म हुवा तो आप ने तमाम कपड़ों की क़ीमत सदक़ा कर दी । (تاریخ بغداد، باب مناقب ابی حنیفۃ، ۱۳/۳۵۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحمَۃُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہ के शरीके तिजारत ने भूले से ऐबदार चीज़ बेच दी, तो आप رَحمَۃُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہ उस की क़ीमत अपने इस्ति'माल में नहीं लाए बल्कि सदक़ा फ़रमा दी । मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! हमारे मुआशरे में भूले से नहीं बल्कि जान बूझ कर, झूटी क़समें खा कर, ऐब छुपा कर चीज़ें फ़रोख़्त की जाती हैं । हमारी अख़्लाक़ी हालत तो इस क़दर गिर चुकी है कि अगर हमारा बच्चा झूट बोल कर या धोका दे कर किसी को लूटने में कामयाब हो जाए, तो हम इसे एक शानदार कारनामा समझते हैं, इस पर बच्चे को शाबाश देते हैं, उस की पीठ थप थपाते हैं और दादे तहसीन देते हुवे इस क़िस्म के जुम्ले कहते हैं कि बेटा अब तुम भी सीख गए हो, तुम्हें कारोबार करना आ गया है, तुम समझदार हो गए हो वग़ैरा वग़ैरा । हांलाकि ऐसे मौक़अ़ पर तो हमें अपने बच्चे की मदनी तर्बिय्यत करनी चाहिये कि बेटा झूट बोल कर और धोका दे कर कारोबार नहीं करना चाहिये, वरना इस के वबाल से हमारे कारोबार व माल में ज़वाल आ जाएगा और हम तबाहो बरबाद हो जाएंगे और आख़िरत में भी ज़लीलो रुस्वा हो कर कहीं अ़ज़ाबे इलाही के हक़दार न हो जाएं । धोका

देने वाले को इस ह़दीसे पाक पर भी ग़ौर करना चाहिये कि मोह़सिने काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا یُؤْمِنُ اَحَدُکُمْ حَتّٰی یُحِبَّ لِاَخِیْہِ مَا یُحِبُّ لِنَفْسِہٖ या'नी तुम में से कोई उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता, जब तक अपने भाई के लिये वोह चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।[1] तो भला वोह कौन शख़्स होगा जो अपने लिये येह पसन्द करेगा कि मुझे मिलावट वाला माल मिले, मुझे धोका दे कर या झूट बोल कर माल दिया जाए, मुझ से सूद लिया जाए, मुझ से रिश्वत ली जाए, मेरे भोले पन का फ़ाइदा उठा कर मेरी जेब ख़ाली कर दी जाए ? यक़ीनन कोई शख़्स अपने लिये येह बातें पसन्द नहीं करेगा, तो फिर अपने मुसलमान भाइयों के लिये ऐसा क्यूं सोचा जाता है.....?

जो धोका दे वोह हम में से नहीं !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ल्ले के एक ढेर पर गुज़रे तो अपना हाथ शरीफ़ उस में डाल दिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उंगलियों ने उस में तरी पाई तो फ़रमाया : "ऐ ग़ल्ले वाले येह क्या ?" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस पर बारिश पड़ गई।" फ़रमाया : "तो गीले ग़ल्ले को तू ने ढेर के ऊपर क्यूं न डाला ताकि इसे लोग देख लेते, जो धोका दे वोह हम में से नहीं।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب قول النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم من غش فلیس منا، الحدیث ۱۰۲، ص ۶۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस (ह़दीसे पाक) से मा'लूम हुवा कि तिजारती चीज़ में ऐब पैदा करना भी जुर्म है और क़ुदरती पैदा शुदा ऐब को छुपाना भी जुर्म। देखो (नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने) बारिश से भीगे ग़ल्ले को छुपाना मिलावट ही में दाख़िल फ़रमाया।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 273)

1....بخاری، کتاب الایمان، باب من الایمان ان یحب لاخیہ مایحب لنفسہ، ۱/۱۶، حدیث: ۱۳

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें शरई उसूलों को पेशे नज़र रखते हुवे, कारोबार में झूट बोलने और धोका दही की आफ़त से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

ऐ मिलावट करने वाले मान जा ख़ौफ़ कर भाई अ़ज़ाबे नार का
धोका बाज़ी में नुहूसत है बड़ी नीज़ दोज़ख़ में सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इमामे आ'ज़म का तक़्वा व परहेज़गारी !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों को धोका देना बहुत ही बुरी आ़दत है। याद रखिये ! अगर हम ने झूटी क़समें खा कर ऐबदार चीज़ बताए बिग़ैर बेची तो हम ने ख़रीदार की ह़क़ तलफ़ी की, जिस का बदला रोज़े क़ियामत हमें देना होगा। लिहाज़ा मह़शर की रुस्वाई से बचने के लिये बन्दों के जो हुक़ूक़ हम पर आते हैं, उन की अदाएगी में ताख़ीर न की जाए और माज़ी में जिन के हुक़ूक़ तलफ़ किये, उन से भी फ़ौरन मुआ़फ़ी मांग लीजिये और आयिन्दा इस मुआ़मले में ह़द दरजा एह़तियात़ से काम लीजिये, इस मुआ़मले में बिल ख़ुसूस अपनी ज़बान को क़ाबू में रखना बहुत ज़रूरी है। क्यूंकि ज़बान ही एक ऐसी चीज़ है जो ज़ियादा गुनाह करवाती है, येह ज़बान किसी को तल्ख़ जुम्ले बुलवा कर, या किसी की ग़ीबत में मुब्तला करवा कर क़ियामत में हमें रुस्वा करवा सकती है। येही वजह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाते थे और बहुत ही कम गुफ़्तगू फ़रमाते। ह़ज़रते शरीक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم अक्सर ख़ामोश रहने वाले, इन्तिहाई ज़हीन और बहुत बड़े फ़क़ीह होने के बा वुजूद लोगों से बह़सो मुबाह़सा से बचने वाले थे। (الخیرات الحسان، ص٥٦) ह़ज़रते इब्ने मुबारक رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى की बारगाह में अ़र्ज़ की : इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ग़ीबत से इतने दूर रहते

www.dawateislami.net

हैं कि मैं ने कभी उन को दुश्मन की ग़ीबत करते हुवे भी नहीं सुना । तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप इस मुआ़मले में बहुत समझदार हैं कि किसी ऐसी चीज़ को अपनी नेकियों पर मुसल्लत़ करें जो इन्हें (दूसरे के नामए आ'माल में) मुन्तक़िल कर दे ।"

(اخبار ابی حنیفۃ واصحابہ، ص:۴۲)

ह़ज़रते जुमैरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि इस बात में लोगों का कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सच बोलने वाले थे, कभी किसी का तज़किरा बुराई से न करते । एक बार आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा गया कि लोग तो आप के बारे में बद कलामी करते हैं, लेकिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ किसी को कुछ नहीं कहते ? तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : (लोगों की यावह गोई पर मेरा सब्र करना) येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल है, वोह जिसे चाहता है अ़त़ा फ़रमाता है ।

ह़ज़रते बुकैर बिन मा'रूफ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفُوْر फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मते नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام में ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ज़ियादा हुस्ने अख़्लाक़ वाला किसी को नहीं देखा । (الخیرات الحسان، ص۵۲)

फ़ुज़ूल गोई की निकले आ़दत, हो दूर बे जा हंसी की ख़स्लत
दुरूद पढ़ता रहूं मैं हर दम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा !

(वसाइले बख़्शिश, स. 574)

कसरते कलाम की तबाह कारियां !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़बान की आफ़त से बचने के लिये अक्सर ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाते और बिला ज़रूरत बोलने से परहेज़ फ़रमाते । यक़ीनन ज़ियादा बोलना और बे सोचे समझे बोल पड़ना, बेह़द ख़त़रनाक नताइज का ह़ामिल और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हमेशा हमेशा की नाराज़ी का बाइ़स बन सकता है । यक़ीनन ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाने या'नी अपने आप को ग़ैर

www.dawateislami.net

ज़रूरी बातों से बचाने ही में आ़फ़िय्यत है। ख़ामोशी की आ़दत डालने के लिये कुछ न कुछ गुफ़्त्गू लिख कर या इशारे से कर लेना बेह़द मुफ़ीद है क्यूंकि जो ज़ियादा बोलता है उ़मूमन ख़त़ाएं भी ज़ियादा करता है, राज़ भी फ़ाश कर डालता है। ग़ीबत व चुग़ली और ऐ़ब जूई जैसे गुनाहों से बचना भी ऐसे शख़्स के लिये बहुत दुश्वार होता है बल्कि बक बक का आ़दी बा'ज़ अवक़ात مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कुफ़्रिय्यात भी बक डालता है। **अल्लाह** रह़मान عَزَّوَجَلَّ हम पर रह़्म फ़रमाए और हमें ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना नसीब करे। आज कल अच्छी सोहबतें कमयाब हैं। कई 'अच्छे नज़र' आने वाले भी बद क़िस्मती से भलाई की बातें बताने के बजाए फ़ुज़ूल बातें सुनाने में मश्ग़ूल नज़र आते हैं। काश ! हम सिर्फ़ रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ ही की ख़ात़िर लोगों से मुलाक़ात करें और हमारा मिलना मिलाना सिर्फ़ ज़रूरत की ह़द तक हो।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : "आदमी के इस्लाम की अच्छाई में से येह है कि **लाया'नी** (لایعنی) या'नी फ़ुज़ूल चीज़ छोड़ दे।" (مُوطّا امام مالک ج ۲ ص ۴۰۳ حدیث ۱۷۱۸)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی येह ह़दीसे पाक नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : जो चीज़ कार आमद न हो उस में न पड़े, ज़बान व दिल व जवारेह़ (या'नी आ'ज़ा) को बेकार बातों की त़रफ़ मुतवज्जेह न करे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 520)

या रब न ज़रूरत के सिवा कुछ कभी बोलूं !
अल्लाह *ज़बां का हो अ़ता क़ुफ़्ले मदीना*
बक बक की येह आ़दत न सरे ह़श्र फंसा दे
अल्लाह *ज़बां का हो अ़ता क़ुफ़्ले मदीना*

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बसीरते इमामे आ'ज़म !

शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की माया नाज़ तस्नीफ़ 'नेकी की दा'वत' सफ़हा नम्बर 396 पर है : हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : एक मरतबा सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जामेअ़ मस्जिद कूफ़ा के वुज़ूख़ाने में तशरीफ़ ले गए तो एक नौजवान को वुज़ू बनाते हुवे देखा, उस से वुज़ू (में इस्ति'माल शुदा पानी) के क़तरे टपक रहे थे । आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ बेटे ! मां-बाप की नाफ़रमानी से तौबा कर ले । उस ने फ़ौरन अ़र्ज़ की : "मैं ने तौबा की ।" एक और शख़्स के वुज़ू (में इस्ति'माल होने वाले पानी) के क़तरे टपकते देखे, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस शख़्स से इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई ! तू बदकारी से तौबा कर ले ।" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं ने तौबा की ।" एक और शख़्स के वुज़ू के क़तरात टपकते देखे तो उसे फ़रमाया : "शराब नोशी और गाने बाजे सुनने से तौबा कर ले ।" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं ने तौबा की ।" सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर कश्फ़ के बाइस चूंकि लोगों के उ़यूब ज़ाहिर हो जाते थे, लिहाज़ा आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस कश्फ़ के ख़त्म हो जाने की दुआ़ मांगी : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुआ़ क़बूल फ़रमा ली जिस से आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को वुज़ू करने वालों के गुनाह झड़ते नज़र आना बन्द हो गए ।

(नेकी की दा'वत, स. 396, المیزان الکبریٰ ج ۱ ص ۱۳۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! करोड़ों ह़नफ़ियों के पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की चश्मे विलायत कि लोगों की वुज़ू के ज़रीए झड़ने वाली मा'सिय्यत या'नी ना फ़रमानियां देख लेती थी ! बेशक येह आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अ़ज़ीम करामत

www.dawateislami.net

थी, ता हम आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को लोगों के उ़यूब पर मुत्त़लअ़ होना गवारा न हुवा, तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस वस्फ़ के ख़त्म हो जाने की दुआ़ की, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुआ़ क़बूल फ़रमा ली।

यहां वोह लोग इब्रत ह़ासिल करें जो कि इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की मह़ब्बत का दम तो भरते हैं मगर ज़बरदस्ती आड़े तिरछे सुवालात (CROSS QUESTIONS) कर के लोगों के ऐ़बों की टटोल में भी रहते हैं, याद रखिये ! बिला मस्लह़ते शरई इरादतन किसी मुसलमान का ऐ़ब मा'लूम करना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। चुनान्चे, पारह 26 सूरतुल हुजुरात आयत नम्बर 12 में साफ़ वारिद है :

وَلَا تَجَسَّسُوْا **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ़ब न ढूंडो।

और अगर इस ऐ़ब को दूसरे पर इस त़रह़ ज़ाहिर किया कि उस को पता हो कि येह फ़ुलां का ऐ़ब है तो येह एक और गुनाह हुवा, अगर वोह ऐ़ब किसी आ़लिमे दीन का था और उस को ज़ाहिर किया तो गुनाह में और भी बढ़ोतरी होगी। चुनान्चे, हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى कीमियाए सआ़दत में फ़रमाते हैं : आ़लिम की ग़लत़ी बयान करना दो वजह से ह़राम है। एक तो इस लिये कि येह ग़ीबत है। दूसरे इस लिये कि लोगों में जुरअत (جُرْ-اَت) पैदा होगी और वोह इसे दलील बना कर उस की पैरवी करेंगे (या'नी बे बाकी के साथ उसी त़रह़ की ग़लत़ियां करेंगे) और शैत़ान भी इस (ग़लत़ियों में पैरवी करने वाले) की मदद के लिये उठ खड़ा होगा और (गुनाहों पर दिलेर बनाने के लिये) इस से कहेगा कि तू (भी यूं और यूं कर कि) फ़ुलां आ़लिम से बढ़ कर परहेज़गार तो नहीं है। (कीमियाए सआ़दत जि. 1, स. 410) जितने ज़ियादा लोगों को इस ख़त़ा पर मुत्त़लअ़ करेगा, गुनाहों में इज़ाफ़ा होता चला जाएगा। मुसलमान को चाहिये कि अव्वल तो लोगों के उ़यूब जानने से बचे, अगर कोई बताने लगे तब भी सुनने से ख़ुद को बचाए। बिल फ़र्ज़ किसी त़रह़ किसी का ऐ़ब नज़र आ गया या मा'लूम हो गया हो तो उस को दबा दे। बिला मस्लह़ते शरई हरगिज़ किसी पर ज़ाहिर न करे।

www.dawateislami.net

ऐबपोशी के मुतअ़ल्लिक़ 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

ऐबपोशी के ह़वाले से 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم सुनिये :

(1) जिस ने मोमिन की पर्दापोशी की गोया कि उस ने ज़िन्दा दरगोर की गई बच्ची को ज़िन्दा कर दिया । (المعجم الاوسط، رقم ۸۱۳۳، ج ۶، ص ۹۷)

(2) जो किसी मुसलमान की तक्लीफ़ दूर करे, अल्लाह عزوجل क़ियामत की तक्लीफ़ों में से उस की तक्लीफ़ दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसलमान की ऐबपोशी करे, तो ख़ुदाए सत्तार عزوجل क़ियामत के रोज़ उस की ऐबपोशी फ़रमाए । (مسلم حدیث ۲۵۸۰ ص ۱۳۹۴)

(3) जो शख़्स अपने भाई का ऐब देख कर उस की पर्दा पोशी कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा ।

(مسند عبد بن حمید ص ۲۷۹ حدیث ۸۸۵) (नेकी की दा'वत, स. 396)

मेरी ज़बान पे 'कुफ़्ले मदीना' लग जाए फ़ुज़ूल गोई से बचता रहूं सदा या रब !

किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और सूने न कान भी ऐबों का तज़किरा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 83)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सफ़ाई सुथराई अपनाइये !

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन रबीअ़ علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ अपनी कमाई से माले तिजारत जम्अ़ करते, फिर इस से कपड़े ख़रीद कर मशाइख़, मुह़द्दिसीन और ह़ाजत मन्दों को पेश करते और (ह़ाजत मन्दों से) फ़रमाते : "अल्लाह عزوجل की ह़म्दो सना करो कि उसी ने तुम्हें येह अ़त़ा फ़रमाया । अल्लाह عزوجل की क़सम ! मैं ने अपने माल में से कुछ भी नहीं दिया ।" आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की ख़िदमत में कोई शख़्स ह़ाज़िर होता तो उस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करते, अगर वोह मोह़ताज होता तो उसे कुछ अ़त़ा फ़रमाते । चुनान्चे, एक शख़्स आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, उस के कपड़े बोसीदा थे, जब लोग

www.dawateislami.net

चले गए तो आप رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे बैठने का हुक्म दिया, जब वोह तन्हा रह गया तो इरशाद फ़रमाया : ''इस मुसल्ले को उठाओ और जो इस के नीचे है ले लो ।'' उस ने मुसल्ला उठाया तो उस के नीचे एक हज़ार दिरहम थे, आप ने फ़रमाया : येह दिरहम ले कर अपनी ह़ालत अच्छी कर लो । तो उस ने अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! मैं तो खुश ह़ाल हूं, ने'मतों में हूं और मुझे इस की ज़रूरत नहीं है ।'' तो आप رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''क्या तुम्हें येह ह़दीस नहीं पहुंची कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है कि वोह अपनी ने'मत का असर बन्दे पर देखे ।'' (سنن الترمذی"، کتاب الأدب، ج۴،ص۳۷۴،حدیث:۲۸۲۸) तुझे अपनी ह़ालत बदलनी चाहिये ताकि तेरा दोस्त तेरी ह़ालत से ग़मगीन न हो ।

(تاریخ بغداد، الرقم۷۲۹۷،ج۱۳،۳۵۸)

सुथरे लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द हैं !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़िकायत से जहां येह मा'लूम हुवा कि मुसलमान ग़ुरबा व मसाकीन की मदद करनी चाहिये, वहीं येह भी मा'लूम हुवा कि हमें सफ़ाई सुथराई का भी एहतिमाम रखना चाहिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दीने इस्लाम ने जहां इन्सान को शिर्क की नजासतों से पाक कर के ईमान की दौलत से इ़ज़्ज़त व रिफ़्अ़त अ़ता फ़रमाई, वहीं ज़ाहिरी त़हारत, सफ़ाई सुथराई और पाकीज़गी की आ'ला ता'लीमात के ज़रीए़ इन्सानिय्यत का वक़ार बुलन्द रखने का भी हुक्म दिया है । बदन की पाकीज़गी हो या लिबास की सुथराई, ज़ाहिरी हैअत की उ़म्दगी हो या त़ौर त़रीक़े की अच्छाई, मकान और साज़ो सामान की बेहतरी हो या सुवारी की धुलाई, अल ग़रज़ हर हर चीज़ को साफ़ सुथरा और जाज़िबे नज़र रखने की दीने इस्लाम में ता'लीम और तरग़ीब दी गई है, चुनान्चे, पारह 2 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 222 में इरशाद होता है :

اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ التَّوَّابِیْنَ وَیُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِیْنَ ﴿۲۲۲﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को ।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक इस्लाम साफ़ सुथरा (दीन) है तो तुम भी नज़ाफ़त ह़ासिल किया करो, क्यूंकि जन्नत में साफ़ सुथरा रहने वाला ही दाखि़ल होगा ।"

(کنزالعمال، حرف الطا، کتاب الطہارہ، قسم الاقوال، الباب الاول فی فضل الطہارہ مطلقاً، ۵/۱۲۳، الحدیث: ۲۵۹۹۶، الجزء التاسع)

ह़ज़रते सह्ल बिन ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो लिबास तुम पहनते हो उसे साफ़ सुथरा रखो और अपनी सुवारियों की देख भाल किया करो और तुम्हारी ज़ाहिरी हैअत ऐसी साफ़ सुथरी हो कि जब लोगों में जाओ तो वोह तुम्हारी इ़ज़्ज़त करें ।" (جامع صغیر، حرف الہمزہ، ص۲۲، الحدیث: ۲۵۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारा प्यारा दीन हमें बाति़नी सफ़ाई के साथ साथ ज़ाहिरी सफ़ाई सुथराई का भी कैसा प्यारा दर्स देता है, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि सफ़ाई का ख़ास ख़याल रखें और अपने लिबास, बदन, इ़मामा, चादर, जूते, गाड़ी, घर, गली, मह़ल्ले और बाज़ार वग़ैरा की सफ़ाई का एहतिमाम करें, बिल ख़ुसूस मस्जिद की ता'ज़ीम की निय्यत से आने से पहले ग़ुस्ल या अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के, अच्छी ख़ुश्बू लगा कर, साफ़ सुथरा लिबास पहन कर आएंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़बादत में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ ह़ासिल होगा ।

कपड़े मैं रखूं साफ़ तू दिल को मेरे कर साफ़
अल्लाह मदीना मेरे सीने को बना दे
अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा
मह़बूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 117-118)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

महरूमाने शबे बराअत !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के वाक़िआ़त बयान करने का एक मक़्सद येह भी होता है कि हम इन के ह़ालाते ज़िन्दगी सुनें और अपनी ज़िन्दगियों को इन की ह़याते मुबारका के सांचे में ढालने की कोशिश करें । लिहाज़ा हमें भी अपने तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा कर के अस्लाफ़ की सीरत व किरदार बिल ख़ुसूस ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم के नक़्शे क़दम पर चलने की कोशिश करनी चाहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ूब ख़ूब बरकतें नसीब होंगी । हमारी ख़ुश क़िस्मती कि शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म का मुबारक महीना अपनी बरकतें लुटा रहा है और येही वोह मुबारक महीना है कि जिस में शबे बराअत (या'नी छुटकारा पाने वाली अ़ज़ीम रात) भी आती है । याद रखिये ! शबे बराअत बेह़द अहम रात है, किसी सूरत भी इसे ग़फ़्लत में न गुज़ारा जाए, इस रात ख़ुसूसिय्यत के साथ रह़मतों की छमा छम बरसात होती है । इस मुबारक शब में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला 'बनी कल्ब' की बकरियों के बालों से भी ज़ियादा लोगों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है । किताबों में लिखा है : "क़बीलए बनी कल्ब" क़बाइले अ़रब में सब से ज़ियादा बकरियां पालता था । आह ! कुछ बद नसीब ऐसे भी हैं जो इस शबे बराअत या'नी छुटकारा पाने की रात भी नहीं बख़्शे जाते ।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى 'फ़ज़ाइलुल अवक़ात' में नक़्ल फ़रमाते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : छे(6) आदमियों की इस रात भी बख़्शिश नहीं होगी : (1) शराब का आ़दी (2) मां-बाप का नाफ़रमान (3) बदकारी करने वाला (4) क़त़्ए तअ़ल्लुक़ करने वाला (5) तस्वीर बनाने वाला और (6) चुग़ुल ख़ोर । (فضائل الاوقات ج ا ص ۱۳۰ حدیث ۲۷ مکتبۃ المنارۃ، مکۃ المکرمۃ)

लिहाज़ा तमाम मुसलमानों को चाहिये कि बयान कर्दा गुनाहों में से अगर مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ किसी गुनाह में मुलव्वस हों तो वोह बिल ख़ुसूस उस गुनाह से और बिल उ़मूम हर गुनाह से शबे बराअत के आने से पहले बल्कि आज और अभी सच्ची तौबा कर लें और अगर बन्दों की ह़क़ तलफ़ियां की हैं तो तौबा के साथ साथ इन की मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब फ़रमा लें ।

(आक़ा का महीना, स. 11 बित्तग़य्युर)

गुनह के दलदल में फंस गया हूं, गले गले तक फंस गया हूं
निकालो मुझ को बराए आदम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा !

(वसाइले बख़्शिश, स. 573.)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का खुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की सीरते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ बयान सुना । ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ऐसी जलीलुल क़द्र शख़्सिय्यत थीं कि आप ने सारी जि़न्दगी प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की ख़िदमत में गुज़ार दी, सारी रात इबादत व तिलावत में बसर होती, ख़ूब ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात फ़रमाते और ज़रूरत के वक़्त गुफ़्तगू फ़रमाते । हमें भी फ़ालतू बातों से बचते हुवे नर्मी और हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आना चाहिये । और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सुन्नत पर अ़मल करते हुवे इ़ल्मे दीन की इशाअ़त और इह़याए सुन्नत की ख़िदमत के लिये ख़ूब ख़ूब कोशिश करनी चाहिये ।

मदनी तर्बिय्यत गाहों का तआ़रुफ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये कमो बेश 97 शो'बों में मदनी काम कर रही है, इन में से एक शो'बा 'मदनी तर्बिय्यत गाह' भी है । जिस में आ़शिक़ाने रसूल मुख़्तलिफ़ मुल्कों, शहरों और क़स्बों से आने

वाले इस्लामी भाइयों की मदनी तर्बिय्यत फ़रमाते हैं । फिर येह इस्लामी भाई इ़ल्मे दीन सीख कर और सुन्नतों की तर्बिय्यत पा कर अपने अ़लाक़ों में जा कर 'नेकी की दा'वत' के मदनी फूल महकाते हैं । लिहाज़ा हमें भी वक़्तन फ़ वक़्तन सुन्नतों की तर्बिय्यत ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी की मदनी तर्बिय्यत गाहों पर ह़ाज़िर होना चाहिये और जो सीखें उसे दूसरों तक भी पहुंचाने की सआ़दत पानी चाहिये । नीज़ जो इस्लामी भाई यकमुश्त ज़ियादा दिनों के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल नहीं कर पाते, उन पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी वक़्तन फ़ वक़्तन कुछ वक़्त के लिये मदनी तर्बिय्यत गाहों में भेजते रहें, इस की बरकत से भी कई आ़शिक़ाने रसूल दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से अ़मली त़ौर पर वाबस्ता हो कर मदनी कामों की धूमें मचाने वाले बनेंगे । اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

इमामे आ'ज़म رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से किसी ने सुवाल किया कि आप इस बुलन्द मक़ाम पर कैसे पहुंचे ? तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने अपने इ़ल्म से दूसरों को फ़ाइदा पहुंचाने में कभी बुख़्ल नहीं किया और जो मुझे नहीं आता था उस में दूसरों से फ़ाइदा ह़ासिल करने से कभी नहीं रुका ।"

(الدرالمختار، المقدمۃ، ج۱، ص۱۲۰۔۱۲۷)

इमामे आ'ज़म की वसिय्यतें

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ह़िक्मत भरी नसीह़तों से मदनी फूल ह़ासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ 46 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला 'इमामे आ'ज़म की वसिय्यतें' हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमा कर मुत़ालआ़ कर लीजिये । इमामे आ'ज़म رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने वक़्तन फ़ वक़्तन अपने शागिर्दों को जो इन्तिहाई मुफ़ीद नसीह़तें फ़रमाईं वोह मुख़्तलिफ़ कुतुब में बिखरी हुई थीं । اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ने अनथक कोशिशों से इन नसीह़तों को यक्जा कर के इन का उर्दू

तर्जमा पेश करने की सआ़दत ह़ासिल की है । येह रिसाला ऐसी नसीह़तों पर मुश्तमिल है जो इन्सान की ज़ाहिरी व बात़िनी दुरुस्ती के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है । इस में इस्लाह़ के बे शुमार मदनी फूल मौजूद हैं । मसलन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना, अ़वाम व ख़्वास की अमानतें अदा करना, उन्हें नसीह़त करना, ज़ियादा हंसने से बचना, तिलावते क़ुरआने पाक की पाबन्दी करना और अपने पड़ोसी की पर्दापोशी करना वग़ैरा । दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से इस रिसाले को रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाऊन लोड भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आऊट भी किया जा सकता है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

12 मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन की सीरते मुबारका पर अ़मल करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये । इन 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम रोज़ाना 'सदाए मदीना लगाना' भी है । दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये उठाने को सदाए मदीना लगाना कहते हैं । आज के इस पुर फ़ितन दौर में मुसलमान दीन से दूर होते जा रहे हैं । सुन्नतें और नवाफ़िल पढ़ना तो दूर की बात, अक्सरिय्यत फ़र्ज़ नमाज़ें तक क़ज़ा कर देती है । मसाजिद वीरान होती जा रही हैं, मस्जिद की आबादकारी के लिये कोशिश करना यक़ीनन सआ़दत की बात है । मन्क़ूल है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का येह मा'मूल था कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه लोगों को नमाज़ के लिये बेदार करते, जब नमाज़े फ़ज्र के लिये तशरीफ़ लाते तो रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये जगाते हुवे आते, नीज़

www.dawateislami.net

अज़ाने फ़ज्र के फ़ौरन बा'द अगर मस्जिद में कोई सोया होता तो उसे भी जगाते। (طبقات کبریٰ، ذکر استخلاف عمر، ۲۶۳/۳) और जो कोई नमाज़े फ़ज्र में ग़ैर ह़ाज़िर होता तो उस के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करते।

चुनान्चे, एक बार आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने सुब्ह़ की नमाज़ में ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अबी ह़स्मा رضی اللہ تعالیٰ عنہ को नहीं देखा। बाज़ार तशरीफ़ ले गए, रास्ते में सय्यिदुना सुलैमान رضی اللہ تعالیٰ عنہ का घर था, उन की वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना शिफ़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہا के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि सुब्ह़ की नमाज़ में, मैं ने सुलैमान को नहीं पाया ! उन्हों ने कहा : रात में नमाज़ (या'नी नफ़्लें) पढ़ते रहे, फिर नींद आ गई, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने फ़रमाया : सुब्ह़ की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ूं येह मेरे नज़दीक इस से बेहतर है कि रात में क़ियाम करूं। (या'नी रात भर नफ़्लें पढ़ूं)

(موطا امام مالک ج ۱ ص ۱۳۴ حدیث ۳۰۰)(नेकी की दा'वत, स. 479)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ सदाए मदीना भी लगाते और नमाज़ में ग़ैर ह़ाज़िर अफ़राद की घर जा कर ख़ैर ख़बर लेते। हमें भी चाहिये कि सदाए मदीना लगाने के साथ साथ नमाज़ों के अवक़ात में येह भी नोट किया करें कि हमारे मह़ल्ले के इस्लामी भाइयों में से कौन जमाअ़त से नमाज़ पढ़ता है और कौन नहीं। अगर कोई नमाज़ी किसी नमाज़ में ग़ैर ह़ाज़िर हो तो उस के घर जा कर या फ़ोन कर के उस की ख़बर निकालें, बीमार हो गया हो तो इ़यादत करें और सुस्ती की वजह से न आया हो तो नेकी की दा'वत दें। तमाम इस्लामी भाइयों को येह अन्दाज़ इख़्तियार करना चाहिये। (अज़ नेकी की दा'वत, स. 479 मुलख़्ख़सन)

अगर हमारी इनफ़िरादी कोशिश से एक इस्लामी भाई भी नमाज़ का आ़दी बन गया तो यक़ीनन नेकी की दा'वत का सवाब मिलने के साथ साथ हमारे लिये सदक़ए जारिया भी बन जाएगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों की आ़दत बनाने, सुन्नतें अपनाने, आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की आ़दत बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुआ़शरे के बिगड़े हुवे कई अफ़राद दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से राहे रास्त पर आते हैं और राहे ख़ुदा में सफ़र की ख़ूब ख़ूब बरकतें पाते हैं। इस ज़िम्न में एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है :

मथुरा (हिन्द) के एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है, मैं एक मॉडर्न नौजवान था, फ़िल्में डिरामे देखना मेरा मश्ग़ला था, मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले बयान की केसीट 'T.V की तबाह कारियां' सुनने का शरफ़ ह़ासिल हुवा, जिस ने मेरी काया पलट दी, मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से मुन्सलिक हो गया। (कुछ अ़र्से बा'द) मुझे एक बीमारी लाह़िक़ हो गई और डॉक्टर ने ऑपरेशन का मश्वरा दिया। मैं घबरा गया, ऐसे में दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ की इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में ज़िन्दगी में पहली बार आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की बरकत से बिग़ैर ऑपरेशन के मेरा मरज़ जाता रहा। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए, अब हर माह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करता हूं, हर माह मदनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवाता हूं और मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने की ख़ात़िर घूम फिर कर सदाए मदीना लगाता हूं।

बे अ़मल बा अ़मल बनते हैं सर ब सर　　तू भी ऐ भाई कर क़ाफ़िले में सफ़र
अच्छी सोह़बत से ठन्डा हो तेरा जिगर　　काश ! कर ले अगर क़ाफ़िले में सफ़र

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث:۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

बात चीत करने के अहम मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! आइये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रिसाले '101 मदनी फूल' से बात चीत के ह़वाले से चन्द अहम मदनी फूल सुनते हैं : ۞ मुस्कुरा कर और ख़न्दा पेशानी से बात चीत कीजिये । ۞ मुसलमानों की दिलजूई की निय्यत से छोटों के साथ मुशफ़िक़ाना और बड़ों के साथ मुअद्दबाना लहजा रखिये । ۞ चिल्ला चिल्ला कर बात करने से ह़द दरजा एह़तियात़ कीजिये । ۞ चाहे एक दिन का बच्चा हो अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उस से भी आप जनाब से गुफ़्त्गू की आ़दत बनाइये । आप के अख़्लाक़ भी اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उ़म्दा होंगे और बच्चा भी आदाब सीखेगा । ۞ बात चीत करते वक़्त पर्दे की जगह हाथ लगाना, उंगलियों के ज़रीए़ बदन का मेल छुड़ाना, दूसरों के सामने बार बार नाक को छूना या नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अच्छी बात नहीं । ۞ जब तक दूसरा बात कर रहा हो, इत़मीनान से सुनिये, बात काटने से बचिये नीज़ दौराने गुफ़्त्गू क़ह्क़हा लगाने से बचिये कि क़ह्क़हा लगाना सुन्नत से साबित नहीं । बात करते वक़्त हमेशा याद रखिये कि ज़ियादा बातें करने से हैबत जाती रहती है । ۞ किसी से जब बात चीत की जाए तो उस का कोई सह़ीह़ मक़्सद भी

होना चाहिये और हमेशा मुख़ात़ब के ज़र्फ़ और उस की नफ़्सिय्यात के मुत़ाबिक़ बात की जाए । ۞ बद ज़बानी और बे ह़याई की बातों से हर वक़्त परहेज़ कीजिये, गाली गलोच से इजतिनाब करते रहिये और याद रखिये कि किसी मुसलमान को बिला इजाज़ते शरई गाली देना ह़रामे क़त़ई है (फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 127) और बे ह़याई की बात करने वाले पर जन्नत ह़राम है । हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस शख़्स पर जन्नत ह़राम है जो फ़ोह़्श गोई (बे ह़याई की बात) से काम लेता है ।"

(کتابُ الصَّمت مع موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، ج۷ص۲۰۴،رقم ۳۲۵ المکتبۃ العصریۃ بیروت)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त हिस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब **'सुन्नतें और आदाब'** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

आ़शिक़ाने रसूल, आएं सुन्नत के फूल
देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान करने के मुतअ़ल्लिक़ मा'रूज़ात

(1) बयान करने से पहले कम अज़ कम एक बार लाज़िमन पढ़ लें
(2) जो कुछ लिखा है वोही सुनाएं, अपनी त़रफ़ से कमी-बेशी न करें
(3) हेडिंग, ह़वालाजात, आयात, और अ़रबी इबारात हरगिज़ न पढ़ा करें
(4) बयान के बारे में मुफ़ीद मश्वरें मजलिसे तराजिम को इरसाल करें

-: राबित़ा :-

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)
translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاهِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। (اَیضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के **70** दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص ۲۷۷)

www.dawateislami.net

﴿4﴾ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَی اللہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं । (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

﴿5﴾ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللہِ

हज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْہَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

﴿6﴾ कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص ۱۲۵)

﴿7﴾ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए उमम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ।

(الترغیب والترہیب ج۲ ص۳۲۹، حدیث ۳۱)

www.dawateislami.net